वक़्ती मुसाहबत और ख़ुद्दाम की ख़ुशामदाना ख़िदमत के भरम में **क़ब्र** की तन्हाई को भूले हुए थे। मगर आह ! यकायक फ़ना का बादल गरजा, मौत की आंधी चली और दुन्या में ता देर रहने की उन की उम्मीदें ख़ाक में मिल कर रह गईं, उन के मसर्रतों और शादमानियों से हंसते बसते घर मौत ने वीरान कर दिये। रोशनियों से जगमगाते महल्लात व क़ुसूर से उठा कर उन्हें घुप अंधेरी क़ुबूर में मुन्तक़िल कर दिया गया। आह ! वोह लोग कल तक अहलो इ़याल की रौनक़ों में शादमान व मसरूर थे और आज क़ुबूर की वहशतों और तन्हाइयों में मग़्मूम व रन्जूर हैं।

अजल ने किस्रा ही छोड़ा न दारा इसी से सिकन्दर सा फ़ातेह़ भी हारा
हर इक ले के क्या क्या न ह़सरत सिधारा पड़ा रह गया सब यूंही ठाठ सारा
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

दुन्या का धोका

अफ़्सोस है उस पर, जो दुन्या की नैरंगियां देखने के बा वुजूद भी इस के धोके में मुब्तला रहे और मौत से यक्सर ग़ाफ़िल हो जाए। वाक़ेई जो दुन्यावी ज़िन्दगी के धोके में पड़ कर अपनी मौत और **क़ब्रो** ह़श्र को भूल जाए और **अल्लाह** तआ़ला को राज़ी करने के लिये अ़मल न करे, निहायत ही क़ाबिले मज़म्मत है। इस धोके से हमें ख़बरदार करते हुए हमारा परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ पारह 22 सूरतुल फ़ातिर की आयत नम्बर 5 में इर्शाद फ़रमाता है :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝

(پ۲۲،الفاطر:۵)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो ! बेशक **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का वा'दा सच है तो हरगिज़ तुम्हें धोका न दे दुन्या की ज़िन्दगी और हरगिज़ तुम्हें **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के हुक्म पर फ़रेब न दे वोह बड़ा फ़रेबी (या'नी शैत़ान)।

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! और मेरे मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन जो मौत और इस के बा'द वाले मुआ़मलात से सह़ीह़ मा'नों में आगाह है वोह दुन्या की रंगीनियों और इस की आसाइशों के धोके में नहीं पड़ सकता। क्या आप ने कभी किसी को मरने वाले की **क़ब्र** में रखने के लिये फ़र्नीचर तय्यार करवाते हुए, **क़ब्र** में **एर कन्डीश्नर** लगवाते हुए, रक़म रखने के लिये तिजोरी बनवाते हुए, खेलों में जीते हुए कप और दुन्यवी काम्याबियों की अस्नाद सजाने के लिये अलमारी बनवाते हुए देखा है ? नहीं देखा होगा और येह काम शरअ़न दुरुस्त भी नहीं हैं, तो जब सब कुछ यहीं छोड़ कर जाना है तो येह डिग्रियां हमारे किस काम की ? जिस दौलत के लिये सारी ज़िन्दगी मेह़नत व मशक़्क़त करते हैं वोह हमारी क्या मदद करेगी ? जिस मन्सब की बिना पर अकड़ फूं करते रहे वोह आख़िर हमारे क्या काम आएगा ? मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अब भी वक़्त है, होश में आइये और क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी कर लीजिये।

दुन्या में मुसाफ़िर बन कर रहो

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत

है कि **हुज़ूरे** पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरा कन्धा पकड़ कर इर्शाद फ़रमाया : "दुन्या में यूं रहो गोया तुम मुसाफ़िर हो।" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाया करते : जब तू शाम करे तो आने वाली सुब्ह़ का इन्तिज़ार मत कर और जब सुब्ह़ करे तो शाम का मुन्तज़िर न रह और ह़ालते सिह़्ह़त में बीमारी के लिये और ज़िन्दगी में मौत के लिये तय्यारी कर ले।

(صَحیح بُخاری ج ٤ ص ٢٢٣ حدیث ٦٤١٦ دار الکتب العلمیة بیروت)

दुन्या, आख़िरत की तय्यारी के लिये मख़्सूस है

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने सब से आख़िरी ख़ुत्बा जो इर्शाद फ़रमाया उस में येह भी है : **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हें दुन्या सिर्फ़ इस लिये अ़त़ा फ़रमाई है कि तुम इस के ज़रीए़ आख़िरत की तय्यारी करो और इस लिये अ़त़ा नहीं फ़रमाई कि तुम इसी के हो कर रह जाओ, बेशक दुन्या फ़ानी और आख़िरत बाक़ी है। तुम्हें फ़ानी (दुन्या) कहीं बहका कर बाक़ी (आख़िरत) से ग़ाफ़िल न कर दे, फ़ना हो जाने वाली दुन्या को बाक़ी रहने वाली आख़िरत पर तरजीह़ न दो क्यूं कि दुन्या मुन्क़त़ेअ़ होने वाली है और बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ लौटना है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो क्यूं कि उस का डर उस के अ़ज़ाब के लिये (रोक और) ढाल और उस عَزَّوَجَلَّ तक पहुंचने का ज़रीआ़ है।

(ذَمُّ الدُّنیا مع موسوعة ابن اَبِی الدُّنیا ج ٥ ص ٨٣ رقم ١٤٦ المکتبة العصریة بیروت)

है येह दुन्या बे वफ़ा आख़िर फ़ना न रहा इस में गदा न बादशह

ऐ आ़शिक़ाने रसूल और मेरे मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस

दुन्या की हैसिय्यत एक गुज़र गाह (या'नी रास्ते) की सी है जिसे तै करने के बा'द ही हम मन्ज़िल तक पहुंच सकते हैं, अब वोह मन्ज़िल जन्नत होगी या जहन्नम ! इस का इन्हिसार इस बात पर है कि हम ने येह सफ़र किस तरह तै किया ! **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअत गुज़ारी करते हुए या ना फ़रमान बन कर ? लिहाज़ा अगर हम जन्नत के इन्आमात लेना और जहन्नम के अज़ाबात से बचना चाहते हैं तो हमें **''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी होगी।''**

अल्लाह करे दिल में उतर जाए मेरी बात

मय्यित का ए'लान

सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया **:** उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है अगर लोग उस का (या'नी मरने वाले का) ठिकाना देख लें और उस का कलाम सुन लें तो मुर्दे को भूल जाएं और अपनी जानों पर रोएं। जब मुर्दे को तख़्त पर रख कर उठाया जाता है उस की रूह़ फड़फड़ा कर तख़्त पर बैठ कर निदा करती है **: ऐ मेरे अहलो इयाल !** दुन्या तुम्हारे साथ इस तरह़ न खेले जैसा कि इस ने मेरे साथ खेला, मैं ने ह़लाल और ग़ैरे ह़लाल माल जम्अ़ किया और फिर वोह माल दूसरों के लिये छोड़ आया। इस का नफ़्अ़ उन के लिये है और इस का नुक़्सान मेरे लिये, पस जो कुछ मुझ पर गुज़री है उस से डरो (या'नी इब्रत ह़ासिल करो)।

(التَّذکِرۃ للقرطبی ص٧٦ دارالکتب العلمیۃ بیروت)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

मुर्दे की पुकार

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि **ख़ातमुल मुरसलीन, रह़्मतुल्लिल आलमीन** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : जब जनाज़ा तय्यार हो जाता है और लोग उसे अपने कन्धों पर उठाते हैं, अगर वोह अच्छा है तो कहता है मुझे **जल्दी** ले चलो, अगर वोह बुरा होता है तो अपने रिश्तेदारों से कहता है : हाए ! मुझे तुम कहां लिये जा रहे हो ! इन्सान के इलावा हर एक चीज़ उस की आवाज़ सुनती है, अगर इन्सान उसे सुन ले तो **बेहोश** हो जाए। (صحیح بخاری ج۱ص۴۶۵ حدیث۱۳۸۰)

क़ब्र की पुकार

ह़ज़रते सय्यिदुना **अबुल ह़ज्जाज** सुमाली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब मय्यित को **क़ब्र** में उतार दिया जाता है तो **क़ब्र** उस से ख़िताब करती है : ऐ आदमी तेरा नास हो ! तूने किस लिये मुझे **फ़रामोश** (या'नी भुला) कर रखा था ? क्या तुझे इतना भी पता न था कि मैं फ़ितनों का घर हूं, तारीकी का घर हूं, फिर तू किस बात पर मुझ पर अकड़ा अकड़ा फिरता था ? अगर वोह मुर्दा नेक बन्दे का हो तो एक **ग़ैबी आवाज़ क़ब्र** से कहती है : ऐ **क़ब्र !** अगर येह उन में से हो जो **नेकी** का हुक्म करते रहे और **बुराई** से मन्अ़ करते रहे तो फिर ! (तेरा सुलूक क्या होगा ?) **क़ब्र** कहती है : अगर येह बात हो तो मैं इस के लिये **गुलज़ार** बन जाती हूं। चुनान्चे फिर उस शख़्स का बदन **नूर** में तब्दील हो जाता है और उस की रूह़ रब्बुल आलमीन عَزَّوَجَلَّ की बारगाह की त़रफ़ **परवाज़** कर जाती है।

(مُسْنَدُ اَبِیْ یَعْلٰی ج۶ص۶۷ حدیث۶۸۳۵دارالکتب العلمیة بیروت)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल और मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सोचिये तो सही उस वक़्त जब कि **क़ब्र** में तन्हा रह गए होंगे, घबराहट त़ारी होगी, न कहीं जा सकते होंगे न किसी को बुला सकते होंगे और भाग निकलने की भी कोई सूरत न होगी। उस वक़्त **क़ब्र** की कलेजा फाड़ पुकार सुन कर क्या गुज़रेगी !

क़ब्र रोज़ाना येह करती है पुकार
मुझ में हैं कीड़े मकोड़े बे शुमार
याद रख ! मैं हूं अंधेरी कोठड़ी
मुझ में सुन वह़शत तुझे होगी बड़ी
मेरे अन्दर तू अकेला आएगा
हां मगर आ'माल लेता आएगा
तेरा फ़न तेरा हुनर औ़हदा तेरा
काम आएगा न सरमाया तेरा
दौलते दुन्या के पीछे तू न जा
आख़िरत में माल का है काम क्या
दिल से दुन्या की मह़ब्बत दूर कर
दिल नबी के इ़श्क़ से मा'मूर कर

लन्दनो पेरिस के सपने छोड़ दे
बस मदीने ही से रिश्ता जोड़ ले

जन्नत का बाग़ या जहन्नम का गढ़ा !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "क़ब्र या तो जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा।"

(سُنَنِ ترمذی ج ٤ ص ٢٠٨ حدیث ٢٤٦٨ دارالفکر بیروت)

गोरे नेकां बाग़ होगी ख़ुल्द का
मुजरिमों की क़ब्र दोज़ख़ का गढ़ा

फ़रमां बरदार पर क़ब्र की रह़मत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नमाज़ों और सुन्नतों पर अ़मल करने वालों के लिये **क़ब्र** में राह़तें और बे नमाज़ियों, और गुनाहों भरे ग़ैर शरई फ़ेशन करने वालों के लिये आफ़तें ही आफ़तें होंगी, चुनान्चे ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन **सुयूत़ी शाफ़ेई** عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन उ़मैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, **क़ब्र** मुर्दे से कहती है कि अगर तू अपनी ज़िन्दगी में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमां बरदार था तो आज मैं तुझ पर रह़मत करूंगी और अगर तू अपनी ज़िन्दगी में **अल्लाह** तआ़ला का ना फ़रमान था तो मैं तेरे लिये अ़ज़ाब हूं, मैं वोह घर हूं कि जो मुझ में नेक और इत़ाअ़त गुज़ार हो कर दाख़िल हुवा वोह मुझ से ख़ुश हो कर निकलेगा और जो ना फ़रमान व गुनहगार था, वोह मुझ से तबाह ह़ाल हो कर निकलेगा। **(شَرْحُ الصُّدُور ص ١١٤، اهوال القبور لابن رجب ص٢٧ دار الغد الجديد، مصر)**

पड़ोसी मुर्दों की पुकार

मन्क़ूल है : जब मुर्दे को क़ब्र में रखा जाता है और उसे अ़ज़ाब होता है तो **पड़ोसी मुर्दे** उस को पुकार कर कहते हैं : ऐ दुन्या से आने वाले ! क्या तूने हमारी मौत से नसीह़त ह़ासिल न की ? क्या तूने न देखा कि हमारे आ'माल कैसे ख़त्म हुए ? और तुझे तो अ़मल करने की मोहलत मिली थी, लेकिन तूने वक़्त ज़ाएअ़ कर दिया, **क़ब्र** का गोशा गोशा उस को पुकार कर कहता है : ऐ ज़मीन पर इतरा कर चलने वाले ! तूने मरने वालों से इ़ब्रत क्यूं ह़ासिल न की ? क्या तूने नहीं देखा था कि तेरे मुर्दा रिश्तेदारों

को लोग उठा उठा कर किस त़रह़ क़ब्रों तक ले गए।

(شَرۡحُ الصُّدُور ص ۱۱٦ مرکز اهلسنت برکات رضا الهند)

मुर्दों से गुफ़्त्गू

"शर्हुस्सुदूर" में है : ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : एक बार हम **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के हमराह मदीनए मुनव्वरह के क़ब्रिस्तान गए। ह़ज़रते मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने क़ब्र वालों को सलाम किया और फ़रमाया : ऐ क़ब्र वालो ! तुम अपनी ख़बर बताओगे या हम तुम्हें बताएं ? सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि हम ने क़ब्र से "وَ عَلَيْكَ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ" की आवाज़ सुनी और कोई कहने वाला कह रहा था : **या अमीरल मुअमिनीन !** आप ही ख़बर दीजिये कि हमारे मरने के बा'द क्या हुवा ? ह़ज़रते मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : सुन लो ! तुम्हारे माल तक़्सीम हो गए, तुम्हारी बीवियों ने दूसरे निकाह़ कर लिये, तुम्हारी औलाद यतीमों में शामिल हो गई, जिस मकान को तुम ने बहुत मज़बूत़ बनाया था उस में तुम्हारे दुश्मन आबाद हो गए। अब तुम अपना ह़ाल सुनाओ। येह सुन कर एक क़ब्र से आवाज़ आने लगी : **या अमीरल मुअमिनीन !** हमारे कफ़न फट कर तार तार हो गए, हमारे बाल झड़ कर मुन्तशिर हो गए, हमारी खालें टुकड़े टुकड़े हो गईं हमारी आंखें बह कर रुख़्सारों पर आ गईं और हमारे नथनों से पीप बह रही है और हम ने जो कुछ आगे भेजा (या'नी जैसे अ़मल

किये) उसी को पाया, जो कुछ पीछे छोड़ा उस में नुक़्सान हुवा।

(شَرْحُ الصُّدُور ص۲۰۹، ابن عَساکِر ج۲۷ ص۳۹۵)

कहां हैं वोह ख़ूब सूरत चेहरे ?

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه दौराने ख़ुत्बा फ़रमाया करते : कहां हैं वोह ख़ूब सूरत चेहरे वाले ? कहां हैं अपनी जवानियों पर इतराने वाले ? किधर गए वोह बादशाह जिन्हों ने आ़लीशान शहर ता'मीर करवाए और उन्हें मज़बूत क़ल्ओ़ से तक़्विय्यत बख़्शी ? किधर चले गए मैदाने जंग में ग़ालिब आने वाले ? बेशक ज़माने ने उन को ज़लील कर दिया और अब येह क़ब्र की तारीकियों में पड़े हैं। जल्दी करो ! नेकियों में सब्क़त करो ! और नजात त़लब करो।

(شُعَبُ الْاِیمان لِلْبَیْهَقِی ج۷ ص۳۶۵ حدیث۱۰۵۹۵)

अभी से तय्यारी कर लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हमें दुन्या की बे सबातियों, इस की बे वफ़ाइयों और **क़ब्र** की तारीकियों का एह़सास दिला कर ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार फ़रमा रहे हैं, क़ब्रो ह़श्र की तय्यारी का ज़ेह्न दे रहे हैं। वाक़ेई **अ़क़्ल मन्द** वोही है जो मौत से क़ब्ल मौत की तय्यारी करते हुए नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा कर ले और सुन्नतों का मदनी चराग़ **क़ब्र** में साथ लेता जाए और यूं **क़ब्र** की रोशनी का इन्तिज़ाम कर ले, वरना **क़ब्र** हरगिज़ येह लिह़ाज़ न करेगी कि मेरे अन्दर कौन आया ! **अमीर** हो या फ़क़ीर, वज़ीर

हो या उस का मुशीर, ह़ाकिम हो या मह़कूम, अफ़्सर हो या चपरासी, सेठ हो या मुलाज़िम, डॉक्टर हो या मरीज़, ठेकेदार हो या मज़दूर अगर किसी के साथ भी तोशए आख़िरत में कमी रही, **नमाज़ें** क़स्दन क़ज़ा कीं, रमज़ान शरीफ़ के रोज़े बिला उ़ज़्रे शरई न रखे, फ़र्ज़ होते हुए भी ज़कात न दी, ह़ज फ़र्ज़ था मगर अदा न किया, बा वुजूदे क़ुदरत शरई पर्दा नाफ़िज़ न किया, मां बाप की ना फ़रमानी की, झूट, ग़ीबत, चुग़ली की आ़दत रही, फ़िल्में, डिरामे देखते रहे, गाने बाजे सुनते रहे, दाढ़ी मुंडवाते या एक मुठ्ठी से घटाते रहे। अल ग़रज़ ख़ूब गुनाहों का बाज़ार गर्म रखा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी की सूरत में सिवाए ह़सरत व नदामत के कुछ हाथ न आएगा। **जिस** ने फ़राइज़ के साथ साथ नवाफ़िल की भी पाबन्दी की, रमज़ानुल मुबारक के इ़लावा नफ़्ली रोज़े भी रखे, गली गली कूचा कूचा **नेकी की दा'वत** की धूमें मचाईं, क़ुरआने पाक की ता'लीम न सिर्फ़ ख़ुद ह़ासिल की बल्कि दूसरों को भी दी, ''चौक दर्स'' देने में हिचकिचाहट महसूस न की, ''घर दर्स'' जारी किया, सुन्नतों की तरबिय्यत के **मदनी क़ाफ़िलों** में हर माह कम अज़ कम तीन दिन सफ़र करने के साथ साथ दीगर मुसल्मानों को भी इस की रग़बत दिलाई, रोज़ाना **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इब्तिदाई 10 दिनों के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ज़्लो करम से ईमान सलामत ले कर दुन्या से रुख़्सत हुवा तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस

की क़ब्र में ह़श्र तक रह़मतों का दरिया मौजें मारता रहेगा और नूरे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चश्मे लहराते रहेंगे।

क़ब्र में लहराएंगे ता ह़श्र चश्मे नूर के
जल्वा फ़रमा होगी जब त़ल्अ़त रसूलुल्लाह की

सिंगर (गुलूकार) दा'वते इस्लामी में कैसे आया ?

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! बस हर दम दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां में बेड़ा पार होगा। आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक ईमान अफ़्रोज़ **मदनी बहार** आप के गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे एक इस्लामी भाई (उ़म्र तक़रीबन 27 साल) का बयान कुछ यूं है कि मुझे बचपन में ना'तें पढ़ने का शौक़ था, घरेलू फ़ंक्शन्ज़ (तक़ारीब) में भी कभी कभार फ़रमाइशी गाना गा लेता। आवाज़ अच्छी होने के सबब ख़ूब दाद मिलती जिस से मैं "फूल" पड़ता। जब थोड़ा बड़ा हुवा तो गिटार (एक आलए मूसीक़ी) सीखने का शौक़ चराया, फिर मैं ने बा क़ाइ़दा गाना सीखने के लिये एकेडमी में दाख़िला ले लिया, कई साल तक सीखने के बा'द मैं ने गाने के मुक़ाबलों में ह़िस्सा लेना शुरूअ़ कर दिया, कई टी वी चेनल्ज़ पर भी गाया। वक़्त के साथ साथ शोहरत भी मिलती गई। फिर मुझे दुबई के बहुत बड़े शो (प्रोग्राम) में शिर्कत का मौक़अ़ मिला, वहां से हिन्द (भारत) चला गया जहां तक़रीबन छ माह तक गाने के मुख़्तलिफ़ मुक़ाबलों में ह़िस्सा लिया, बड़े बड़े फ़ंक्शन्ज़ और फ़िल्मों में गाना गाया और काफ़ी नाम व माल कमाया। फिर गुलूकारों की

टीम के साथ दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक में गया जिन में [केनेडा (टोरेन्टो, वींक्वर), अमरीका के 10 स्टेट्स (शिकागो, लॉस एन्जेलस, सान फ़्रान्सिस्को वग़ैरा), इंग्लेन्ड (लन्दन)] में गया । जब कुछ अ़र्से के लिये वत़न आया तो अहले ख़ाना और मह़ल्ले दारों ने बड़ी पज़ीराई की, अगर्चे नफ़्स को इस से बड़ा मज़ा आया मगर दिल की दुन्या बे सुकून थी, कुछ कमी सी मह़सूस हो रही थी । दिल रूह़ानिय्यत का त़लबगार था, नमाज़ के लिये मस्जिद में आना जाना हुवा तो वहां पर इ़शा की नमाज़ के बा'द होने वाले दर्से **फ़ैज़ाने सुन्नत** में शिर्कत की सआ़दत मिली । दर्स अच्छा लगा लिहाज़ा मैं कभी कभार उस में बैठने लगा मगर दिलो दिमाग़ पर बार बार मुल्क से बाहर जाने ख़ूब गाने सुनाने, धन दौलत कमाने और शोहरत पाने का भूत सुवार था, दर्स के बा'द इस्लामी भाई मुझ पर जूं ही **इन्फ़िरादी कोशिश** शुरूअ़ करते मैं टाल मटोल कर के निकल जाता । एक रात सोया तो ख़्वाब में **दा'वते इस्लामी** के एक मुबल्लिग़ की ज़ियारत हुई जो बुलन्द जगह पर खड़े मुझे अपने पास बुला रहे थे गोया कि मुझे गुनाहों के दलदल से निकलने पर उभार रहे थे, जब सुब्ह़ उठा तो अपने मौजूदा अन्दाज़े ज़िन्दगी पर कुछ देर ग़ौरो फ़िक्र किया मगर गुनाहों भरी ह़ालत ही रही, कुछ अ़र्से बा'द मैं ने एक और ख़्वाब देखा जिस ने मुझे हिला कर रख दिया ! क्या देखता हूं कि मैं मर चुका हूं और मेरी लाश को ग़ुस्ल दिया जा रहा है । फिर मैं ने ख़ुद को बरज़ख़ में पाया, उस वक़्त मैं ने अपने आप को ऐसा बेबस मह़सूस किया कि कभी न किया था, अब मैं ने ख़ुद से कहा : "तुम बहुत

मशहूर होना चाहते थे, देख ली अपनी औक़ात !" सुब्ह़ जब आंख खुली तो मैं पसीने में नहाया हुवा था और मेरा बदन थरथर कांप रहा था और यूं लग रहा था गोया एक मौक़अ़ और देते हुए मुझे दोबारा दुन्या में भेज दिया गया हो। अब मेरे सर से गाना गाने का भूत मुकम्मल तौ़र पर उतर चुका था, मैं ने गुनाहों से सच्ची तौबा की और अ़ज़्मे मुसम्मम कर लिया कि आइन्दा किसी सूरत में भी गाना नहीं गाऊंगा। जब घर वालों को इस बात का पता चला तो उन्हों ने सख़्त मुज़ाह़मत की मगर **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के करम से मेरा मदनी ज़ेह्न बन चुका था लिहाज़ा मैं अपने फ़ैसले पर क़ाइम रहा। मुझे ख़्वाब में दोबारा उसी मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी की ज़ियारत हुई, उन्हों ने मेरी ह़ौसला अफ़्ज़ाई फ़रमाई। **अल्लाह** तआ़ला के इस इर्शादे मुबारक :

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۶۹﴾

(**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे और बेशक **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) नेकों के साथ है (پ۲۱، العنکبوت:۶۹)) के मिस्दाक़ मुझे **दा'वते इस्लामी** में इस्तिक़ामत मिलती चली गई। मैं ने नमाज़ों की पाबन्दी शुरूअ़ कर दी, अपने चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ सजा ली और अपने सर को **सब्ज़ सब्ज़ इमामे** से सर सब्ज़ कर लिया। पहले मैं गानों के अश्आ़र पढ़ा करता था अब मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ होने वाली कुतुब व रसाइल का मुत़ालआ़ करना मेरा मा'मूल था। एक रात कोई किताब पढ़ते पढ़ते जब सोया तो मेरी क़िस्मत अंगड़ाई ले कर

जाग उठी और मुझे ख़्वाब में अपने आक़ा व मौला صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब हो गई जिस पर मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ का जितना भी शुक्र करूं कम है। इस से मेरे दिल को बड़ी ढारस मिली। फिर मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा ह़ाफ़िज़ मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी मदनी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِى की क़ब्र मुबारक मुसल्सल बरसात की वजह से जब खुली तो उन के सह़ीह़ सलामत बदन, ताज़ा कफ़न, सब्ज़ सब्ज़ इमामे और ज़ुल्फ़ों के जल्वे देख कर मैं ख़ुशी से झूम उठा कि **दा'वते इस्लामी** के वाबस्तगान पर **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कैसा करम व एह़सान है। मदनी काम करते करते कल का गुलूकार **जुनैद शैख़** मदनी माह़ोल की बरकत से आज का मुबल्लिग़ व ना'त ख़्वां बन गया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर मुझे **दा'वते इस्लामी** की ज़ैली मुशावरत के ख़ादिम (निगरान) की ह़ैसिय्यत से मस्जिद और बाज़ार में **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स देने, **सदाए मदीना** लगाने या'नी नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने, अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** करने की सआ़दत ह़ासिल है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे मरते दम तक मदनी माह़ोल में इस्तिक़ामत नसीब फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

99 अस्माउल ह़ुस्ना की ख़्वाब में तरग़ीब

ऐ आ़शिक़ाने रसूल और मेरे मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या के मशहूर व मा'रूफ़ साबिक़ गुलूकार (SINGER) **जुनैद शैख़** ने येह "मदनी बहार" लिखवा देने के कुछ दिन बा'द सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ को

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

बताया कि "اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ह़ाल ही में मुझे फिर एक बार सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार हुवा, जिस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के **अस्माउल ह़ुस्ना** याद करने का इशारा मिला। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह मैं ने याद कर लिये हैं।" प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ यूं तो ह़दीसे पाक में **99 अस्माउल ह़ुस्ना** याद करने की फ़ज़ीलत मौजूद है मगर ख़ुश नसीबी की मे'राज कि आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर अपने दीवाने को ख़ुसूसिय्यत के साथ इस की तरग़ीब इर्शाद फ़रमाई। **99 अस्माउल ह़ुस्ना** की फ़ज़ीलत सुनिये और झूमिये चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के निनानवे नाम हैं जिस ने इन्हें याद कर लिया वोह **जन्नत** में दाख़िल होगा।

(صحیح بخاری ج ۲ ص۲۲۹ حدیث ۲۷۳۶)

(तफ़्सीली मा'लूमात के लिये "**नुज़्हतुल क़ारी शर्ह़े सह़ीह़ुल बुख़ारी**" सफ़ह़ा 895 ता 898 मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

ने मुझ से **महब्बत** की और जिस ने मुझ से **महब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा ।" (مِشکاۃُ الْمَصابِیح ج١ ص٥٥ حدیث ١٧٥ دارالکتب العلمیۃ بیروت)

सुन्नतें आ़म करें, दीन का हम काम करें

नेक हो जाएं मुसल्मान, मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"सुन्नतों भरा लिबास पहनों" के सतरह हुरूफ़ की निस्बत से लिबास के 17 मदनी फूल

तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा : صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ﴿1﴾ जिन्न की आंखों और लोगों के सित्र के दरमियान पर्दा येह है कि जब कोई कपड़े उतारे तो **बिस्मिल्लाह** कह ले । (معجم اوسط ج ٢ ص٥٩ حدیث٢٠٠٤) ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जैसे दीवार और पर्दे लोगों की निगाह के लिये आड़ बनते हैं ऐसे ही येह, **अल्लाह** (पाक) का ज़िक्र जिन्नात की निगाहों से आड़ बनेगा कि जिन्नात इस (या'नी शर्मगाह) को देख न सकेंगे । (मिरआत, जि. 1, स. 268) ﴿2﴾ जो शख़्स कपड़ा पहने और येह पढ़े : اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ کَسَانِیْ ھٰذَا وَرَزَقَنِیْہِ مِنْ غَیْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّۃٍ (**तरजमा :** तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** पाक के लिये जिस ने मुझे येह कपड़ा पहनाया और मेरी त़ाक़त व क़ुव्वत के बिग़ैर मुझे अ़त़ा किया ।) तो उस के अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे । (شُعَبُ الْاِیمان ج٥ ص١٨١ حدیث ٦٢٨٥) ﴿3﴾ जो बा वुजूदे क़ुदरत ज़ेबो ज़ीनत का (या'नी ख़ूबसूरत) लिबास पहनना तवाज़ोअ़

(या'नी आ़जिज़ी) के तौ़र पर छोड़ दे, **अल्लाह** पाक उस को करामत का हुल्ला (या'नी जन्नती लिबास) पहनाएगा ﴿4﴾ (ابو داوٗد ج ٤ ص٣٢٦ حديث ٤٧٧٨) मालदार अगर **अल्लाह** पाक की ने'मत के इज़्हार की निय्यत से शरई ख़राबी से पाक उ़म्दा लिबास पहने तो सवाब का ह़क़्दार है ﴿5﴾ सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक लिबास अक्सर सफ़ेद कपड़े का होता (كَشْفُ الْاِلْتِباس فِى اسْتِحْبابِ اللِّباس ص٣٦) ﴿6﴾ **फ़रमाने मुस्तफ़ा :** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم "सब में अच्छे वोह कपड़े जिन्हें पहन कर तुम ख़ुदा की ज़ियरत क़ब्रों और मस्जिदों में करो, सफ़ेद हैं।" (ابن ماجه ج٤ ص١٤٦ حديث ٣٥٦٨) या'नी सफ़ेद कपड़ों में नमाज़ पढ़ना और मुर्दे कफ़नाना अच्छा है (बहारे शरीअ़त जि. 3 स. 403) ﴿7﴾ इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो अपना लिबास साफ़ रखे उस के ग़म कम हो जाएंगे और जो ख़ुश्बू लगाए उस की अ़क़्ल में इज़ाफ़ा होगा (एह्याउल उ़लूम (उर्दू,) जि. 1, स. 561) ﴿8﴾ लिबास ह़लाल कमाई से हो और जो लिबास ह़राम कमाई से ह़ासिल हुवा हो, उस में फ़र्ज़ व नफ़्ल कोई नमाज़ क़बूल नहीं होती। (كَشْفُ الْاِلْتِباس فِى اسْتِحْبابِ اللِّباس ص٤١) ﴿9﴾ रिवायत में है : जिस ने बैठ कर इमामा बांधा, या खड़े हो कर सरावील (या'नी पाजामा या शलवार) पहनी तो **अल्लाह** पाक उसे ऐसे मरज़ में मुब्तला फ़रमाएगा जिस की दवा नहीं। (كَشْفُ الْاِلْتِباس فِى اسْتِحْبابِ اللِّباس ص٣٩) ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुरहानुद्दीन ज़रनूजी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं इमामा बैठ कर बांधना या पाजामा या शलवार खड़े खड़े पहनना तंगदस्ती के अस्बाब है (تَعْلِيمُ الْمُتَعَلِّم ص١٢٦)

﴾10﴿ पहनते वक़्त सीधी त़रफ़ से शुरूअ़ कीजिये (कि सुन्नत है) मसलन जब कुर्ता पहनें तो पहले सीधी आस्तीन में सीधा हाथ दाख़िल कीजिये फिर उलटा हाथ उलटी आस्तीन में (تَعْلِيْمُ الْمُتَعَلِّم ص٤٣) ﴾11﴿ इसी त़रह़ पाजामा पहनने में पहले सीधे पाइंचे में सीधा पाउं दाख़िल कीजिये और जब (कुर्ता या पाजामा) उतारने लगें तो इस के बर अ़क्स (या'नी उलट) कीजिये या'नी उल्टी त़रफ़ से शुरुअ़ कीजिये ﴾12﴿ **''बहारे शरीअ़त''** जिल्द 3 सफ़्ह़ा 409 पर है : सुन्नत येह है कि दामन की लम्बाई आधी पिंडली तक हो और आस्तीन की लम्बाई ज़ियादा से ज़ियादा उंगलियों के पौरों तक और चौड़ाई एक बालिश्त हो (رَدُّالْمُحتار ج ٩ ص ٥٧٩) ﴾13﴿ सुन्नत येह है कि मर्द का तहबन्द या पाजामा टख़्ने से ऊपर रहे (मिर्आत जि. 6, स. 94) ﴾14﴿ मर्द मर्दाना और औ़रत ज़नाना (या'नी लेडीज़) लिबास पहने। छोटे बच्चों और बच्चियों में भी इस बात का लिह़ाज़ रखिये (वरना पहनाने वाले गुनह गार होंगे) हां जो लिबास मर्द व औरत और बच्चा और बच्ची दोनों में पहना जाता हो और इस में कोई शर्ई ख़राबी ना हो तो दोनों पहन सकते हैं ﴾15﴿ **''बहारे शरीअ़त''** जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 481 पर है : मर्द के लिये नाफ़ के नीचे से घुटनों के नीचे तक ''औ़रत'' है या'नी इस का छुपाना फ़र्ज़ है। नाफ़ इस में दाख़िल नहीं और घुटने दाख़िल हैं। (دُرِّمُختار و رَدُّالْمُحتار ج٢ص٩٣) इस ज़माने में बहुतेरे (या'नी बहूत से लोग) ऐसे हैं कि तहबन्द या पाजामा इस त़रह़ पहनते हैं कि पेड़ू (या'नी नाफ़ के नीचे) का कुछ ह़िस्सा खुला रहता है, अगर कुर्ते वग़ैरा से इस त़रह़ छुपा हो कि

जिल्द (या'नी Skin) की रंगत न चमके तो ख़ैर, वरना **ह़राम** है और नमाज़ में चौथाई की मिक्दार खुला रहा तो नमाज़ न होगी (बहारे शरीअ़त जि. 1, स. 481) एह़राम वालें को इस में सख़्त एहतियात की ज़रूरत है ﴾16﴿ आज कल बा'ज़ लोग सरेआ़म लोगों के सामने नीकर (हाफ़ पेन्ट) पहने फिरते हैं जिस से उन के घुटने और रानें नज़र आती हैं येह **ह़राम** है, ऐसों के खुले घुटनों और रानों की त़रफ़ नज़र करना भी **ह़राम** है। बिल ख़ुसूस खेलकूद के मैदान, वरज़िश करने के मक़ामात और साहिले समन्दर (Beach) पर इस त़रह़ के मनाज़िर ज़ियादा होते हैं। लिहाज़ा ऐसे मक़ामात पर जाने में नज़र की हिफ़ाज़त की सख़्त ज़रूरत है ﴾17﴿ **तकब्बुर** के तौ़र पर जो लिबास हो वोह मम्नूअ़ है। **तकब्बुर** है

(बहारे शरीअ़त जि. 3, स. 409,رَدُّالْمُحتار ج ۹ ص ۵۷۹)

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब "**बहारे शरीअ़त**" हि़स्सा 16 (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो पाओगे बरकतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد